कथा सरिता

ज़िम्मेदारी बोझ नहीं

बहुत पुरानी बात है, किसी गांव में एक साधु रहते थे। दुनिया की मोह माया से दूर होकर जंगल में अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। सुबह-शाम ईश्वर के गुण गाना और लोगों को अच्छे कर्मों का महत्व बताना यही उनका काम था।

एक दिन उनके मन में आया कि जीवन में एक बार माता वैष्णों देवी के दर्शन ज़रूर करने चाहिए। बस यही सोचकर साधु महाराज ने अगले दिन ही वैष्णों देवी जाने का विचार बना लिया। एक पोटली में कुछ खाने का सामान और कपड़े बांधे और चल दिए माँ वैष्णों देवी के दर्शन करने। ऊँचे पर्वत पर विराजमान माता वैष्णों देवी के दर्शन के लिए काफी चढ़ाई चढ़नी पड़ती है।

वो साधु भी धीरे-धीरे सर पे पोटली रखकर चढ़ाई चढ़ रहे थे। तभी उनकी नज़र एक लड़की पर पड़ी, उस लड़की ने अपनी पीठ पर एक लड़के को बिठाया हुआ था। वो लड़का विकलांग था और वो लड़की उसे कमर पर बिठाकर चढ़ाई चढ़ रही थी।

साधु को ये सब देखकर उस लड़की पर बड़ी दया आयी और वो बोले - बेटी थोड़ी देर रुककर बैठ जा, तू थक गयी होगी, तूने इतना बोझ उठा रखा है। वो लड़की बोली - बाबा जी, बोझ तो आपने अपने सर पर उठा रखा है, ये तो मेरा भाई है...चलते-चलते साधु के पांव ठिठक गए।

कितनी बड़ी बात कह दी उस लड़की ने, कितना गूढ़ मतलब था उस लड़की की बात का - बोझ तो आपने उठा रखा है, ये तो मेरा भाई है... कितनी ज़िम्मेदारी भरी थी उस मासूम सी लड़की में...!

उस दिन उस साधु को एक बात समझ में आ गयी कि अगर हर इंसान अपनी ज़िम्मेदारी निभाने लगे तो शायद दुनिया में दुःख नाम की कोई चीज़ ही ना बचे... अपनी ज़िम्मेदारी से बचिए मत, ज़िम्मेदार बनिये, पूरी तरह से अपनी ज़िम्मेदारी निभाइये।

राम-राम-राम

एक पंडित रोज़ रानी के पास कथा करता था। कथा के अंत में सबको कहता कि 'राम कहे तो बंधन छूटे'। रानी के पास एक पिंजरे में तोता भी पला हुआ था। जब पंडित राम नाम लेने से बंधन छूटे की बात कहता... तभी पिंजरे में बंद तोता बोलता, 'यूं मत कहो रे पंडित झूठे'। पंडित को क्रोध आता कि ये सब क्या सोचेंगे, रानी क्या सोचेगी। पंडित अपने गुरु के पास गया, गुरु को सब हाल बताया। गुरु तोते के पास गया और पूछा तुम ऐसा क्यों कहते हो?

तोते ने कहा, 'मैं पहले खुले आकाश में उड़ता था। एक बार मैं एक आश्रम में जहाँ सब साधू-संत राम-राम-राम बोल रहे थे, वहां बैठा तो मैंने भी राम-राम बोलना शुरू कर दिया। एक दिन मैं उसी आश्रम में राम-राम बोल रहा था, तभी एक संत ने मुझे पकड़ कर पिंजरे में बंद कर लिया, फिर मुझे एक-दो श्लोक सिखाये। आश्रम में एक सेठ ने मुझे संत को कुछ पैसे देकर खरीद लिया। अब सेठ ने मुझे चांदी के पिंजरे में रखा, मेरा बंधन बढ़ता गया। निकलने की कोई संभावना न रही। एक दिन उस सेठ ने राजा से आपना काम निकलवाने के लिए मुझे राजा को गिफ्ट कर दिया, राजा ने खुशी-खुशी मुझे ले लिया, क्योंकि मैं राम-राम बोलता था।

रानी धार्मिक प्रवृत्ति की थी तो राजा ने रानी को दे दिया। अब मैं कैसे कहूँ कि 'राम-राम कहें तो बंधन छूटे'! तोते ने गुरु से कहा कि आप ही कोई युक्ति बताएं, जिससे मेरा बंधन छूट जाए। गुरु बोले - आज तुम चुपचाप सो जाओ, हिलना भी नहीं, रानी समझेगी मर गया और छोड़ देगी।

ऐसा ही हुआ, दूसरे दिन कथा के बाद जब तोता नहीं बोला, तब संत ने आराम की सांस ली। रानी ने सोचा तोता तो गुमसुम पड़ा है, शायद मर गया। रानी ने पिंजरा खोल दिया, तभी तोता पिंजरे से निकलकर आकाश में उड़ते हुए बोलने लगा कि 'सतगुरू मिले तो बंधन छूटे'।

अतः शास्त्र कितना भी पढ़ लो, कितना भी जाप कर लो, लेकिन जब तक गुरुओं का भी गुरु सतगुरु ना मिले तब तक बंधन नहीं छूटता।

विपरीत परिस्थिति में भी

एक शख्स सुबह-सुबह उठा, साफ कपड़े पहने और सत्संग घर की तरफ चल दिया ताकि सत्संग का आनंद प्राप्त कर सके। चलते-चलते रास्ते में ठोकर खाकर गिर पड़ा। कपड़े कीचड़ से सन गए, वापिस घर आया। कपड़े बदलकर वापस सत्संग की तरफ रवाना हुआ। फिर ठीक उसी जगह ठोकर खाकर गिर पड़ा और वापस घर आकर कपड़े बदले। फिर सत्संग की तरफ रवाना हो गया। जब तीसरी बार उस जगह पर पहुँचा तो क्या देखता है कि एक शख्स चिराग हाथ में लिए खड़ा है और उसे अपने पीछे-पीछे चलने को कह रहा है। इस तरह वो शख्स उसे सत्संग घर के दरवाज़े तक ले आया। पहले वाले शख्स ने उससे कहा, आप भी अंदर आकर सत्संग सुन लें। लेकिन वो शख्स चिराग हाथ में थामे खड़ा रहा और सत्संग घर में दाखिल नहीं हुआ। दो तीन बार इनकार करने पर उसने पूछा आप अंदर क्यों नहीं आ रहे हैं?

दूसरे वाले शख्स ने जवाब दिया, इसलिए क्योंकि मैं काल हूँ, ये सुनकर पहले वाले शख्स की हैरत का ठिकाना न रहा। काल ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, मैं ही था जिसने आपको ज़मीन पर गिराया था। जब आपने घर जाकर कपड़े बदले और दुबारा सत्संग घर की तरफ रवाना हुए तो भगवान ने आपके सारे पाप क्षमा कर दिए। जब मैंने आपको दूसरी बार गिराया और आपने घर जाकर फिर कपड़े बदले और फिर दुबारा जाने लगे तो भगवान ने आपके पूरे परिवार के गुनाह क्षमा कर दिए। मैं डर गया कि अगर अबकी बार मैंने आपको गिराया और आप फिर कपड़े बदलकर चले गए तो कहीं ऐसा न हो कि वह आपके सारे गांव के लोगों के पाप क्षमा कर दे। इसलिए मैं यहाँ तक आपको खुद पहुंचाने आया हूँ।

ईश्वर की स्मृति रहे

अब हम देखें कि उस शख्स ने दो बार गिरने के बाद भी हिम्मत नहीं हारी और तीसरी बार फिर पहुँच गया और एक हम हैं यदि हमारे घर पर कोई मेहमान आ जाए या हमें कोई काम आ जाए तो उसके लिए हम सत्संग छोड़ देते हैं, भगवान का ध्यान छोड़ देते हैं, क्यों? क्योंकि हम जीव अपने भगवान से ज़्यादा दुनिया की चीज़ों और रिश्तेदारों से ज़्यादा प्यार करते हैं। उनसे ज़्यादा मोह है। इसके विपरीत वह शख्स दो बार कीचड़ में गिरने के बाद भी तीसरी बार फिर घर जाकर कपड़े बदलकर सत्संग घर चला गया, क्यों? क्योंकि उसके दिल में भगवान के लिए बहुत प्यार था। वह किसी कीमत पर भी अपनी बंदगी का नियम टूटने नहीं देना चाहता था। इसीलिए काल ने स्वयं उस शख्स को मंज़िल तक पहुँचाया। जिसने उसे दो बार कीचड़ में गिराया और मालिक की बंदगी में रुकावट डाल रहा था, बाधा पहुँचा रहा था।

इसी तरह हम जीव भी जब प्रभु की स्मृति में बैठें तब हमारा मन चाहे कितनी ही चालाकी करे या कितना ही बाधित करे, हमें हार नहीं माननी चाहिए और मन का डट कर मुकाबला करना चाहिए। एक न एक दिन हमारा मन स्वयं हमें परमात्मा के ध्यान के लिए उठायेगा और उसमें रस भी लेगा। बस हमें भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए और न ही किसी काम के लिए साधना में ढील देनी है। वह मालिक अपने आप ही हमारे काम सिद्ध और सफल करेगा। इसीलिए हमें भी मन से हार नहीं माननी चाहिए और निरंतर अभ्यास करते रहना चाहिए।

जोधपुर-शंकर नगर (राज.)। केन्द्रीय मंत्री और जोधपुर के वर्तमान सांसद गजेन्द्र सिंह शेखावत को ओम शांति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु.जय लक्ष्मी।

मुरलीपुरा-जयपुर म्यूज़ियम। आध्यात्मिक कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बनवारी शर्मा। साथ हैं ब्र.कु. सुष्मा दीदी।

जैतारण-राज.। विधायक अविनाश गहलोत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. छाया।

आगरा-सिकंदरा। कार्यक्रम के पश्चात् मेंटल हॉस्पिटल के डायरेक्टर सुधीर जैन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. शीला, ब्र.कु. सरिता तथा ब्र.कु. गीता।

दिल्ली-पीतमपुरा। त्रिदिवसीय 'खुशनुमा जीवन का रहस्य' कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए मानसिंह जी,पीतमपुरा एसोसिएशन मेम्बर, सुरेश भाटिया,डायरेक्टर,लॉरेल स्कूल, ब्र.कु. इन्द्रा,माउंट आबू, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रभा, डॉ. रजनी,हेड, एनेस्थीसिया डिपार्टमेंट,भगवान महावीर हॉस्पिटल तथा अन्य।

बीवीगंज-फर्रूखाबाद(उ.प्र.)। झूले लाल जयंती के अवसर पर ब्र.कु. मंजु का शॉल पहनाकर सम्मान करने के पश्चात् समूह चित्र में सिन्धी समाज महिला जिलाध्यक्ष रजनी लौंगवानी, सिन्धी समाज प्रमुख ईश्वरदास शिवानी तथा अन्य।